धर्म जीवन

अक्तूबर- 2013

* बरसी की सभा
* सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं
* सत्य धर्म बोध उत्सव और सत्संग
* सुख अनुराग की लीला
* विज्ञानमूलक दार्शनिक सत्य सिद्धान्त
* एक अनाम का जाना

बरसी की सभा

28 अगस्त 2013 को बहुत सन्मान के योग्य श्री विजय कुमार जी अग्निहोत्री (गुरू महाराज के पोता श्री) जी के सम्बन्ध में उनके सपुत्र कर्नल ललित जी अग्निहोत्री जी की इच्छा अनुसार चण्डीगढ़ कोठी न० 3124 सैक्टर 21-डी उनके ग्रह में सुबह 10.30 बजे बरसी की सभा की गई

सभा कराने के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान जगदीष प्रसाद जी, मिसिज़ सुरजीत बराड़ जी और एक दो साथी समेत नियत स्थान पर पहुंच गए थे।

सबसे पहले जगदीष जी ने "हमारे पू० सत्गुरू जी तुम हो धन्य" नामक भावों से भरकर गाया। उसके बाद सबने खड़े होकर परम पू० भगवान की छवि का सुन्दर हार द्वारा अर्चन किया गया। इसके बाद माननिय बहू जी, बड़े पंडित जी, श्रीमान विजय कुमार जी, श्रीमती सुन्दरी जी का भी उनकी फोटोज़ द्वारा सुन्दर हारों से अर्चन किया और प्रणाम किया। सब हाजरीन ने फूलों द्वारा उनका सम्मान प्रदर्शन किया।

फिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपना ब्यान आरम्भ करते हुए कहा कि माननिय पंडित विजय कुमार जी अग्निहोत्री जी के सम्बन्ध में हम यह पहली बरसी की सभा कर रहे हैं। इसलिए पहले एक भजन का गान होगा। "परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराऐंगे।" नामक भजन का जगदीष जी ने गान किया। भजन के बाद श्रीमान जी ने कहा कि हमने पंडित अग्निहोत्री जी को श्रद्धांजली देनी है। याद करना है। सन्मान देकर अपना भला करना है। सच्ची श्रद्धांजली क्या होती हे? इस विषय में बताया कि पहली बात तो यह है कि हमने परलोक वासी सम्बन्धियों को याद रखना है, बिसराना नहीं। केवल याद ही नहीं रखना बल्कि उनके सम्बन्ध में हितकर मेल बनाए रखना है। उच्च भावों के सूत्रों से उनके साथ जुड़े रहना है। उनकी शुभ इच्छाओं को हमेशा ध्यान में रखकर पूरा करना है। उनके जीवन की सुन्दरता को खोजना है। उनके गुणों की सुन्दरता को सामने लाकर उनके आगे श्रद्धा से झुकना है। उनके सम्बन्ध में अपनी कमियों के प्रति शोक और दुख से भरना है। क्षमा याचनाएं करनी है। उनके लिए Prayer करनी है। उनके शुभ वा जीवन के भले के लिए दिल से कामना करनी है। यह सारा ब्यान बहुत ही सुन्दर और प्रभावशाली था।

सभापति जी ने पंडित जी के वंश की महानता बताते हुए बताया कि उन्हें क्या विशेष विरासत मिली थी। उसके सन्दर्भ में पंडित जी के महान व्यक्तित्व को पेश किया। उच्च भावों से भरकर बताया कि वह उच्च शिक्षित थे और फिर I.A.S. बने। वह किताबें पढ़ने के बहुत शौकीन थे। बड़े बड़े महान लेखकों की किताबें पढ़ते रहते थे। किस प्रकार उन्होंने अपनी योग्यता द्वारा कैरों साहिब, फिर वीर भद्दर जी जैसे मुख्य मन्त्रियों को प्रभावित किया और निडर होकर नौकरी की। वह Merit को लेकर फैसले करते थे। इमानदारी और integrity उनके खून के अन्दर थी। उस लैवल के अफसर अब नदारद हैं। वह सत्ताधारी होकर भी बहुत दीन थे। बहुत ही कोमल हृदय के स्वामी थे। देव समाज वा अपने पू० गुरू दादा जी के बिना वह कोई धर्म को नहीं मानते थे। वह मोह से बहुत ऊपर थे। पवित्रता, नम्रता सरलता, स्पष्टवादिता की मूरत थे। सभापति जी ने अपने कई अनुभव और सुन्दर घटनाओं द्वारा उनके जीवन का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया। बताया कि किस प्रकार आत्म निर्भर रहकर खुश रहते थे।

फिर पंडित जी के बड़े सपुत्र कर्नल ललित जी ने भरे दिल वा उच्च भावों से भरकर उनके व्यक्तित्व के ठोस गुणों का अपने अनुभव के आधार पर ब्यान करते

बाकी का पेज 16 पर

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 10
अक्तूबर – 2013
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं

परम पू० भगवान देवात्मा का आर्विभाव नेचर के विकास क्रम में अर्विभूत हुआ है। उनकी परिचालक शक्तियां, उनकी रोशनी उनका तेज सब कुछ अद्वितीय है। मनुष्य मात्र के लिए बिल्कुल नई चीज़ है। सारे मनुष्य मात्र के लिए, एक नई खोज के प्रति चैलेंज है। उन्होंने अपनी अद्वितीय रोशनी के अन्दर आत्मिक जगत की मनोविज्ञानिक क्षेत्र की बिल्कुल ही नई सचाईयां खोजी हैं, उनमें से एक सचाई यह है कि मनुष्य के भीतर जो भिन्न भिन्न सुख लालसाए हैं, वही अन्धेरा पैदा करती हैं, मनुष्य को अन्धा करती हैं। वास्तविकता को देखने के अयोग्य करती हैं। किसी विशेष काल वा समय के भीतर मनुष्य की बुद्धि को एक पुरानी कहावत के अनुसार विपरीत ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य अपनी सुख लालसाओं की (मनुष्य की मूल प्रकृति सुखों पर लट्टू जो है) मात्रा के अनुसार सम्बन्धित पक्षों में सदा अन्धा रहने के लिए मजबूर करती हैं। मनुष्य उनमें कहां तक गलतान हैं, यह देखना है।

एक सच्ची घटना है कि पालतु शेर ने अपने ही मालिक साधु को चाटते हुए, जब उसके किसी जख़्म का छिलका उतरने पर, उसके मुंह को खून लग गया, तब वह अपने ही स्वामी को काट कर खा गया, फिर उसके बचे खुचे शरीर को सूंघता रहा कि मेरा स्वामी कहां गया? उसको क्या हो गया?

जिस प्रकार खून की ललक की ज़ोरदार हवस ने शेर को अन्धा कर दिया कि (1) साधु तो मेरा स्वामी है (2) यह मेरा बहुत बड़ा उपकारी है, यह महीनों सालों से मुझे खाने के लिए दे रहा है, मुझे सम्भालता है, मेरी गन्दगी को भी हटाता है (3) यह बहुत कीमती और ज़रूरी सम्बन्धी है। (4) इसके ऊपर मेरा जीवन निर्भर करता है। (5) यह पहले की तरह ही प्यार करने की चीज़ है, यह चीर फाड़कर खाने की वस्तु नहीं। इस वास्तविकता के पक्ष से शेर की हवस ने उसे अन्धा कर दिया, और जो कुछ उसको नहीं करना चाहिए था, उसके अन्धकार ने करवा दिया और अपने हितकर्ता को स्वंय ही मार दिया।

जो कुछ शेर के साथ हुआ, जैसे वह अन्धेरे का शिकार होकर अपने स्वामी के लिए भी और स्वंय के लिए भी हानिकारक और विनाशकारी सिद्ध हुआ, वही हाल हमारे सुख हमारे लिए करते हैं या करवाते हैं। हमारा भी यही परिणाम होता है, परन्तु नज़र नहीं आता।

गांव की एक 5 – 7 वर्ष की बच्ची मां के हाथ के उबले हुए चने खाया करती थी। मां ने कुछ चनों

में चूहे मारने की दवाई मिलाकर अलग रखे थे। उसने उन जहरीले चनों को अपनी जेबों में और हाथों में भर लिया। ऊपर से मां आ गई, मां ने देख लिया तो लड़की को खाने से मना करने लगी, परन्तु वह खेतों की ओर भाग गई कि चनों के स्वाद के कारण उसे मां शत्रु रूप में नज़र आने लगी। मां कहती रही कि यह चने ज़हर भरे है, पर उसका सुख अपनी मां पर भी विश्वास नहीं करने देता था। वह मां के आगे आगे भाग रही थी। चनों के चटपटे स्वाद ने उस बच्ची के भीतर अन्धेरा पैदा कर दिया (1) मेरे से चने लेने के लिए मां झूठ बोलती है, कोई ज़हर आदि नहीं, उल्टा वह तो स्वाद होते हैं। (2) मां खराब है, बहुत बुरी है, मेरे से लेने के लिए मेरे पीछे भाग रही है। उसको कुछ पता नही था कि वह (1) मेरी जान बचा रही है। (2) मैं अन्धी और गल्त हूं, यह ठीक है, उपकारी है (3) मैं यह चने खाने से जान से हाथ धो बैठूंगी।

सुख लालसा हमें अन्धेरे का शिकार बना कर, गुमराह करके हानि, दुख और विनाश के मार्ग पर डाल देती है। बच्चों को सुख की चाट का लालच देकर बच्चों से गहने लूट लिए जाते हैं। बलात्कार और ज़ुल्म होते हैं। मासुम का निर्दयता पूर्ण अपहरण कर लिया जाता है, इस प्रकार के दृष्य किसी से छुपे हुए नहीं हैं।

सुख लालसाओं के केवल बच्चे ही शिकार नहीं होते, इसके शिकार बच्चे, बूढ़े और नौजवान, पढ़े लिखे, अमीर, गरीब, जज, वकील, राजे, अहलकार, वज़ीर सब होते हैं। कोई भी इससे बचा हुआ नहीं है। जब सारी की सारी मानवता सुख लालसाओं का शिकार है, तो उससे सम्बन्धित अन्धेरों का भी शिकार होना अनिवार्य है। हां, अपनी सुख लालसाएं न स्वंय दिखती है, न ही उनसे उपजे अन्धेरे दिखाई देते हैं। अपना अन्धेरा आप देख पाना कठिन ही नहीं, लगभग असम्भव है।

इस घोर अन्धेरे के वासी होकर, मनुष्य (सधारणत:) अपने आप को जो कुछ समझता और देखता है और जो कुछ अपने आपको बनाए फिरता है, वह वह कुछ बिल्कुल ही नहीं होता और वास्तव में जो कुछ है, वह कुछ उसकी सुख अनुरागी प्रकृति के द्वारा उत्पन्न अन्धेरे के भीतर वह देख नहीं सकता। इसलिए अपने आप को जानना मनुष्य जीवन की महान उपलब्धि और प्राप्ति गिणी जाती है। मनुष्य अपने प्रकृत रूप से अकसर अनजान ही उमर बिता देता है।

जैसे एक दरिंदे को अपने शिकार की तड़पन, चीख़ पुकार, आहें, दुख, खून खराबा और उसकी जान, मौत की ठोस सचाई दिखाई नहीं देती, उसके दिल को छूती तक नहीं, उसी प्रकार वासना के अन्धे किए हुए बलात्कारी को दो चार साल की बच्ची बच्ची नहीं दिखाई देती, पीड़ित की पवित्रता, उसका दुख, चीखों पुकार, तड़पन, बेनती, फरियाद, इज्ज़त, उसकी जान, उसके माता पिता की पीड़ा, दुख, अनादर, सहम, समाजिक कलंक, उनका निर्दोष होना कुछ भी दिखाई नहीं देता। अपनी सुख लालसा के अन्धेरे में कोई सरकार, कनून, पुलिस, कैद, जेल हां मौत आदि के सब ठोस परिणाम ओझल हो जाते हैं।

पंडित नेत राम जी ने कितना सुन्दर वा ठीक देखा है: -

"ज्यों ज्यों चले इन्हां (लालसाएं की) दी हट्टी
साडी होवे चौड़ चपट्टी
लोको सुख लालसाएं बुरीयां, छुरियां मारदियां"

सुखों की चाट, सुखों के इश्क और प्यार मनुष्य को अपना पक्षपाती बना लेते हैं। वह पक्षपात भी दिखाई नहीं देता। मनुष्य उन सुखों का वकील बन जाता है। मनुष्य अपने प्यारे सुख की हिमायत में खड़े होकर उसकी पोषकता बेबाक करने लग जाता है। वह शराब जैसे भयानक ज़हर की आदत का शिकार होकर

उसकी स्तृति करता है, कभी उसको लाल परी बताता है, कभी उसे तेहरवां रतन कहता है, कभी कहता है कि यह वह दवा है जो नंग मलंग मनुष्य को कारूं बादशाह (जिसके खजाने की चाबीयां ऊंट पर लादी जाती थी) बना देती है। वह उसमें भयानक छुपे हुए दुख, कंगाली और मौत के विनाशकारी फदे को कभी वास्तविक रूप में देख नहीं सकता।

सुखों के इश्क मनुष्य को अपनी हानि अपना दुख वा नाश देखने नहीं देता। उनके विरूद्ध बिल्कुल सुनना पसंद नहीं करता, सहन ही नहीं करता। कड़वी सचाईयां न समझ आती हैं और न हज़म ही होती हैं। नशे की घातक मस्ती अन्दर मनुष्य को मृत्यु दायक सुख उलझाए रखते हैं।

सुखों के इश्क और अनुराग ठीक और खराब और ठोस अन्तर को देखने ही नहीं देते। नेचर के नियमों की ठोस अटलता को समझ से परे कर देते हैं। पापों और गुनाहों के आरम्भिक स्वादों भरे शुगल, उनको आकर्षित बनाए रखते हैं और उनके महा भयानक दिल शिकन, जीवन नाशक अटल परिणामों की सत्यता तक उनकी दृष्टि को जाने ही नहीं देते।

एक बार एक सुहृदय ने एक अमरीकन नौजवान की मौत के बिस्तरे से, सिगरेट द्वारा आया सच्चा अनुभव छाप कर नौजवानों को मुफ्त बांटना शुरू कर दिया। उसका हैडिंग था "सिगरेट ने मुझे मार दिया" सिगरेट पीने वाले उस इश्तिहार को देखकर ही तोड़ मरोड़ कर परे फैंक देते और पकड़ाने वाले को घूर घूर कर देखते। जैसे वह उनका जानी दुश्मन हो।

कोई दिन, काल या समय बुरा नहीं होता, मनुष्य की बुद्धि को विपरीत नहीं करता सुख अनुराग बुद्धि को भृष्ट ही नहीं करते, मनुष्य की अक्ल को उल्टा दृष्टा बना देते हैं। सब मनुष्य सुखों में ग्रस्त हैं अपने अपने सुखों की चाट मनुष्य को अटल सचाईयों को देखने नहीं देती। मनुष्य सुख को देखता है, परन्तु शुभ को नहीं जानता। सुखों की गुलामी उल्टे दृष्टा मनुष्यों को सत्य को झूठ और झूठ को सत्य, अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा, हितकारी को शत्रु और शुत्रु को मित्र, अमृत को ज़हर और जहर को अमृत देखने के लिए बेबस वा मजबूर कर देती है। इसीलिए मनुष्य झूठा मिथ्याचारी और दोषी बने रहने के लिए मजबूर है। नीच सुखों के अन्धेरे ही, कौमों और मुल्कों पर अपने अपने रंग चढ़ाए हुए हैं। अपनी अपनी सभ्यताओं को अन्धेरे से पूर्ण अवस्था ने दोष पूर्ण और हानि कारक बनाया हुआ है। यह सब कुछ मनुष्य नीच सुखों के उपजाए अन्धेरे अन्दर खुशी खुशी जीवन व्यतीत करते हैं और अभिमान से भरे रहते हैं।

सुखों के प्यार ही, सारे संसार को दुखिया वा कुल जगत को दुखों का घर बनाते हैं। हर नीच अनुराग के पीछे, फूलों में कांटे की तरह दुख, पीड़ा वा मौत छुपी हुई है। नीच सुखों की बढ़ती जाती तृप्ति भयानक दुखों में बदल जाती है। नीच सुखों के अति ज़ोरदार बहाव के अधिकार मनुष्य को अपना बंदी, कैदी वा गुलाम बनाकर घिसाघिसा कर तड़पाते हैं। मनुष्यों की ज़िन्दगी दुखों का घर बनी हुई हैं। बढ़ते हुए रोग, रोगों के लिए हस्पताल, बढ़ते जुल्मों, गुनाहों, बलात्कारों के सैलाब, बढ़ रही कोर्ट कचहरियां, मुकदमें, कैदें, हवालतें, आए दिन बिन आई मौतें वा आत्मघात, सब मनुष्य जीवन के गहरे नर्क को ही चित्रित करते हैं। मनुष्य के अपने खरीदे सुख आखिर उसके लिए दुखों का घर वा स्त्रोत बन जाते हैं। सुख अनुराग ही मनुष्य के कुल दुखों, हानियों और नाश के मूल कारण हैं।

मनुष्य के सुख अनुराग ही उसे अन्धा और पागल और गुमराह बनाते हैं। ऐसे तर्क की रोशनी में गुरू महाराज की यक्ता बाणी "सब मनुष्य पागल हैं,

जो पागल खाने में बन्द हैं, वह अधिक पागल हैं और दूसरे कम पागल हैं" कुछ समझ आ सकती है। मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन उसका अपना आप है और कोई नहीं। यह मनुष्य के जीवन का दुखांत है। मनुष्य अपने आपको ही अपना दुश्मन बनाने के लिए मजबूर और बेबस है।

मनुष्य के सुख प्रेम ही उसे स्वार्थी बनाते हैं। नीच सुखों की गुलामी अपनत्व से बाहर जाने से रोकती है। परत्व के एहसासों वा बोधों को मारती है। मनुष्य को वहिशी, दरिंदा, भेड़िया, हिंसक पशुओं से भी अधिक भयानक और निकृष्ट बना देती हैं।

मनुष्य के भीतर जितने अधिक सुख अनुराग अधिकार रखते हैं, उतनी मात्रा में ही हृदय के भीतर सुन्दर भावनाओं, सात्विक वा महान भावनाओं की बेलों को पनपने नहीं देते। अमरबेल की तरह वह उसे खा लेते हैं। नीच सुख अनुरागों के ऊंट वा अन्य पशुओं की तरह सुन्दर भावों की बगिया को वह उजाड़ देते हैं। सुखों के प्यार से बड़ा मनुष्य के नैतिक सौंदर्य्य को लूटने घसूटने वाला कोई और डाकू चोर नहीं।

कोई धर्म गुरू और कोई धर्म ग्रन्थ नीच सुखों के इश्कों की उक्त प्रकृत भयानकता और महा विनाशकारीं अंधता भरे मृत्यु दायक स्वभाव से आज तक ढकण उठाने में कोई सफल नहीं हुआ और न हो सकता है। वह सभी मनुष्य सुख अनुरागों के अंधेरे की घुमण घेरी में फंसे रहने के लिए मजबूर हैं और बेबस हैं।

केवल और केवल शुभ और सत्य के यक्ता और अतिशय महान अनुरागों से उपजी देव रोशनी ही उक्त भयानकता भरे अन्धेरे की सच्ची सोझी, योग्य जनों को दे सकती है।

पू० भगवान की यह नायाब ज्योति और शक्ति को पाकर ही एक एक नशई न केवल नशों से बर्बाद हो रही ज़िन्दगी से बचा है, बल्कि दूसरों को बचाने वाला बना है। एक एक स्वार्थी बेटा, बेटी, पति, पत्नी, भाई आदि को अपने सुखों के अन्धेरे से निकाल कर भगवान ने सेवाकारी वा हितकर जीवन ही नहीं बनाया बल्कि दूसरों की भलाई के लिए सर्वस्व अर्पण कारी वजूद बना दिया। एक एक द्वेष भावी के अन्धेरे को दूर करके दूसरों के लिए हानिकर्ता रूप दिखाकर, हितकर जीव बना दिया। देव धर्म का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहां सुख अनुराग के अन्धेरे जहां तक दूर हुए हैं, वहां पर नारकिय जीवन स्वर्गिय जीवन बन गए हैं।

बलदेव सिंह

महोत्सव मुबारक

पाठक गण नोट फरमाएं कि इस वर्ष परम पू० भगवान देवात्मा का 163 वां मुबारक शुभ जन्म दिवस 16 दिसम्बर 2013 से 19 दिसम्बर 2013 तक पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाएगा।

-मन्त्री

सत्य धर्म बोध उत्सव और सत्संग

जैसे पहले बताया जा चुका है कि सत्य धर्म बोध उत्सव और सत्संग का प्रोग्राम देव धर्म मिशन के मन्दिर संगरूर में 17 सितम्बर से 22 सितम्बर तक रखा गया इस प्रोग्राम का पता वा प्रेरणा निमन्त्रण पत्रों वा फोन आदि के द्वारा धर्म सम्बन्धियों को दी गई।

17 सितम्बर तक साधन मन्दिर की सफाई वा सफेदी आदि श्रीमान सीता राम जी और उनके परिवार और उनके दामाद नरेश कुमार जी द्वारा बहुत मेहनत से की गई। पानी आदि का उचित प्रबन्ध किया गया। सत्संग सम्बन्धी सभाओं के लिए चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी, उनके साथ ओम प्रकाश जी वर्मा यमुना नगर और श्रीमान अजय कुमार जी दिल्ली से 17 दुपहिर को पहुंच गए। श्रीमान बलबहादुर जी पहले ही वहां पहुंच चुके थे। एक नये भद्र जन लखनऊ से संपर्क में थे, बड़े चाव भाव से वहां पहुंच गए। एक नये जन जयपुर से सत्संग के लिए पहुंच गए।

17 सितम्बर रात से 18, 19 सितम्बर तक शाम सुबह रखी गई 20 सितम्बर सुबह भी सभा की गई। इन सभाओं का संक्षेप वर्णन इस प्रकार है।

17.9.2013 रात - सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- इस सभा में और जनों के भिन्न सिविल सर्जन संगुरूर वा डाक्टर नवजोत जी कालड़ा जी भी शामिल हुए। भजन के बाद सभापति जी ने बताया कि दुनियां में धर्म मतों की भरमार है। बहु संख्या जन इन धर्म मतों के पीछे हैं, परन्तु अफसोस कि किसी को नहीं पता सच्चा धर्म क्या है? धर्म के नाम पर जो पूजा, पाठ नमाज़ रोज़े आदि कई प्रकार के साधन किए जाते हैं, इनका धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। मुज्जफरपुर के फसादों का जिकर करते हुए बताया गया कि धर्म वैर विरोध पैदा करके तबाही लाते हैं। परम पू० भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि धर्म उच्च जीवन का नाम है, भले बनने का नाम है। भले जीवन की पहचान भले व्यवहारों से है। जहां यह नहीं वहां धर्म नहीं, उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय का समर्थन करते हुए चन्द शब्द कहे और जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई।

18.9.2013 सुबह की सभा: - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। भजन के गान के बाद श्री सभापति जी ने फरमाया कि पशु सारी जिन्दगी मान्सिक अन्धकार में ही रहता है। परन्तु सच यह है कि मनुष्य भी सारी उमर अन्धकार में ही रहता है। यदि ऐसा न होता तो विश्वविख्यात मुक्केबाज जेल में न होते। टाईगर वुड का परिवारिक जीवन बर्बाद न होता। इस अन्धेरे के कारण प्रमोद महाजन और प्रवीन महाजन समय से पहले दुनियां से विदा न होते। हृदय के अन्धेरे के कारण महा अनर्थ होता रहता है। चड्डा भाईयों की मौत इस अन्धेरे का जीता जागता प्रमाण है। वह करोड़पति तो थे, पर आत्मिक अन्धकार के शिकार हो गए। धन का प्यार, लोभ, अंहकार, गुस्से के अन्धेरे के सुन्दर उदाहरण दिए। यह सचाई कि अपने अपने भावों से अन्धेरे के कारण तबाही को हाजरीन पर बहुत खूबसूरती से अंकित किया।

18.9.2013 रात की सभा। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि विकास करने के लिए दीनता का पैदा होना बहुत अवश्यक है। सच्ची दीन अवस्था में उच्च असरों के प्राप्त हो जाने का नेचर का अध्यात्मिक नियम पूरा हो जाता है। देव प्रभावों के मिलने से अपनी प्रकृत अवस्था नज़र आ जाती है। सच्चा आत्मिक उच्च परिवर्तन पैदा हो जाता है। सभापति जी ने डाक्टर श्री राम जी का उच्च

परिवर्तन पेश किया।

19.9.2013 सुबह, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। भजन के बाद सभापति जी ने पूछा कि धर्म की क्यों अवश्यकता है। उन्होंने बताया कि धर्म पाए बिना, जीना और सुखी रहना, मनुष्य की दो मूल इच्छाए पूरी नहीं होती। धर्म के बिना मनुष्य का दुखी होना और नाश होना अवश्यक है। आगे बताया कि धर्म अच्छे बनने का नाम है। उच्च बनने के लिए उच्च भावों की जाग्रति और विकास अवश्यक है। फिर बताया कि ईमानदारी बिना कोई धर्म नहीं हो सकता। ईमानदार बनना बहुत कठिन है। पवित्रता बिना भी उच्च जीवन व धर्म जीवन नहीं होता। फिर सन्मान वा श्रद्धा उच्च जीवन के मूल हैं, उनके विषय में बताया गया कि जहां उच्च, सात्विक और विशुद्ध परोपकार के जीवन के प्रति श्रद्धा भाव नहीं होता, वह आदमी बिल्कुल उच्च वा धर्म जीवन प्राप्त नहीं कर सकता। सभा द्वारा विशेष कर नये जन बहुत प्रभावित हुए।

चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई। सभा के बाद ओम प्रकाश जी अदर्श भी पहुंच गए।

19.9.2013 रात की सभा- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। भजन के बाद सभापति जी ने कृतध्नता की उदाहरणें देकर उपस्थित जनों से इन दुखदाई घटनाओं का कारण पूछा। दुनियां में उच्च भावों की अवर्तमानता के कारण विशेष कर शुक्रगुजारी का न होने के कारण नर्क फैला हुआ है, जहां उच्च भाव हैं वहां स्वर्गिय सम्बन्धों के द्वारा सच्चा सुख मिलता है और मनुष्य धर्म रूप में ढलता है। एक अमरीकन डाक्टर की सुन्दर घटना का भी सुन्दर वर्णन किया। काफी रोचक वातावरण पैदा हो गया, फिर सभापति जी ने गुरू महाराज को धन्यवाद देते हुए सारे हाजिर धर्म सम्बन्धियों के शुभ की कामना की।

20.9.2013 सुबह की सभा- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने पूछा कि मनुष्य जो सोचता है, जो बोलता है और जो प्रेरणा उसके भीतर पैदा होती है, वह कौन पैदा करता है? इसके सम्बन्ध में सभापति जी ने बताया कि हमें हमारे नीच सुखों के आकर्षण चलाते हैं। इनको ही देव समाज की भाषा में भाव शक्तियां कहते हैं, काम वासना मनुष्यों को पुतलियों की तरह नचाती हैं। कई पुजारी वा सन्त भी इसके आगे कमज़ोर हैं। दिल्ली के एक सन्त की अति घृणित घटना बताई, जिसने एक स्कूल की छोटी बच्ची से अश्लीलता की हरकत करने की कोशिश की। फिर नशा सुख की गुलामी की एक नौजवान की तरसनाक व्यथा सुनाई जो I.A.S. बनने की तैय्यारी कर रहा था, परन्तु सिगरेट के नशे का गुलाम था। नशा सुख उसे कुछ करने नहीं देता था। धन का बन्धन योग्य जनों का भी कैसे गले का फंदा बन जाता है। बड़े बड़े अमीरों और वकीलों की बर्बादी का कारण बनते हैं, उसके बड़े हृदय स्पर्षिय और ठोस उदाहरण पेश किए। मनुष्य न अपने परिचालक भावों को आप देख सकता है, न आप घटा सकता है, न उनसे मुक्त हो सकता है। मानव के आन्तरिक भावों की लीला का X-Ray केवल और केवल भगवान देवात्मा की ज्योति द्वारा ही होता है।

सत्य धर्म बोध उत्सव

प्रवेश सभा 4.30 बजे शाम। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

श्रीमान सुनील दत्त जी ने भजन गाया और पवित्र छवि का सुन्दर हार से अर्चन करके देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की, फिर सभापति जी ने गुरू के द्वार में सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने इस उत्सव की विशेषता बारे बताते हुए बताया कि इस निराले उत्सव में मनुष्य का ध्यान सब से महत्व पूर्ण विषय अर्थात उसके अपने आप की ओर फेरा जाता है। मनुष्य और बहुत कुछ जानता है और जानने का यत्न करता है, पर उसका

अपने अस्तित्व की ओर विशेषकर अपने परिचालक भावों की ओर ध्यान नहीं जाता, उसके भाव जिस ओर ले जाएं, उसकी कोई पेश नहीं जाती। अक्सर मनुष्य के भाव उसे दुखों और विनाश की ओर ले जाते हैं। 16 दिसम्बर की घटना इस बात को रोशन करती है, कि वासना ने कुछ नौजवानों को फांसी की सज़ा तक पहुंचाया है। इन भावों का मूल स्वभाव हानि, दुख और विनाश है, यह परम पू० भगवान देवात्मा के प्रभावों में आकर ही पता लगता है। फिर उन्होंने दूर दूर से आए धर्म सम्बन्धियों को शुभ आगमन कहा, खड़े होकर प्रबन्ध और संगरूर वासियों की ओर से उनका स्वागत किया। आप ऐसे सौभाग्यवान हो जो यहां पधारे हो जहां पर निराले और हितकर विषयों के सम्बन्ध में चर्चा होगी। मनुष्य क्या है? नेचर क्या है? मनुष्य का नेचर के साथ सम्बन्ध क्या है? इन प्रश्नों का संक्षेप ज्ञान दिया गया। कुछ नेचर के विषयों में बताया गया । ध र्म की सांईस को समझने के लिए विशेष आंखों का होना अवश्यक है, धर्म में पहला है वैज्ञानिक दृष्टिकोण और दूसरा विकास का नियम। नेचर के परिवर्तन का एक भाग विकास है। भगवान देवात्मा ने हमें सचाई का श्रद्धावान बनाया। उन्होंने अपनी शिक्षा को भी यदि विज्ञान पर खरी न उतरे तो छोड़ देने के लिए हुक्म दिया है। इस स्थान पर दिमाग के ताले खोले जाते हैं। इस दर पर दौले शाह के चूहे नहीं बनाया जाता। इस विश्व का विकास सचाई से बन्धा हुआ है। झूठे सस्कारों के साथ नहीं बांधा जाता। नीच सुखों के प्यार आत्मा के कीड़ों की तरह हैं। सत्गुरू ने बताया है कि जितना इन नीच सुखों से मुक्त हो उतनी ही आत्मा की सेहत। नशे के सुख से मुक्त हो उतनी ही आत्मा की सेहत। नशे का सुख, काम वासना का सुख, अपने विश्वास के साथ अन्धा प्यार विनाश पैदा करता है। जो सत्गुरू इस कोढ़ से बचाते हैं, उनका धन्यवाद नहीं किया जा सकता। जितना हम हानि रहित होते जाऐंगे उतना ही सच्चा भला होगा। हमारा वजूद चारों जगतों के लिए सहायकारी और सेवाकारी बन सकें।

बाहर के स्थानों अर्थात दिल्ली, लखनऊ - जयपुर, यमुनानगर, अम्बाला लुधियाना, चण्डीगढ़, भटिंडा, गंगानगर, पदमपुर, कल्याण, मल्लेका, केसूपुरा, दड़वा, गोनियाना मंडी, कैथल श्री अकबर पुर, मेरठ आदि से जन पहुंचे। पांच छः उच्च शिक्षित गण और लेडी प्रिंसीपल मिसिज सुरजीत बराड, डाक्टर सतिन्द्र ढिलों, प्रिंसीपल मिसिज़ शशी जी जैन, डा० विनोदखेड़ा जी और परिवार आदि पहुंचे और सीता राम जी के दर्जन के करीब रिश्तेदार भी शामिल हुए।

<u>21.9.2013 सवेरे 9 बजे - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी।</u> भजन के गान के बाद पू० भगवान की पवित्र छवि का सुन्दर हार द्वारा अर्चन किया और देव स्तोत्र का सामूहिक गान के बाद दिल के गहरे भावों से सभापति जी ने हृदय स्पर्षिय भावों से व्याख़्या की, फिर पू० भगवान के दरबार में हृदय गत भावों से सहाय प्रार्थना की, जिससे वातावरण भाव पूर्ण हो गया।

फिर जगदीष जी ने "मुझको मेरा बोध कराओ" नामक भजन का गहरे भावों से गान किया, सभापति जी ने फरमाया कि यह बहुत ऊंचा विषय है, आत्म बोध के लाभ और आत्मिक अबोधता की हानियां। यह विषय श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी वा श्रीमान धर्म बल जी जैसे महान जनों के समय का विषय है। पर मैं ऊंचे लैवल की बात नहीं करूंगा। बोध क्या होता है? जानकारी वा बोध में क्या अन्तर है? कुछ सन्तोषजनक उत्तर न पाकर सभापति जी ने बताया कि जब ज्ञान के ऊपर अमल होता है, तब बोध पैदा होता है। जैसे लम्बे सांस लेना हितकर है, खाना चबाकर खाना हितकर है, यह ज्ञान तो बहुत लोगों को होता है, पर किसी किसी को ही इसका बोध है, कोई ही इस पर अमल करता है। आग, सांस, जहर का हमें बोध है ज्ञान का flood आया हुआ है, परन्तु दुख की

बात है कि अपना ज्ञान पाने की इच्छा ही नहीं है। महान सुकरात ने कहा था Know Thyself। श्री सभापति जी ने बताया कि जब महान, सेवाकारी डाक्टर मथुरादास को उनको अंग्रेजों का हिमायती समझकर टोडी कहा गया और मुर्दाबाद के नारे लगाए गए, तो उसको बर्दाश्त नहीं कर सके। रातों रात मोगा छोड़कर जाने के लिए मजबूर हो गए। कारण यही था कि उनको अपना बोध नहीं था। मनुष्य के ज्ञान अथाह वर्धन हुआ है पत्थर युग, धातु युग, खेती युग आदि अनेक मंजिलों को पार करके मनुष्य आधुनिक युग में प्रवेश कर गया है, परन्तु उसको अपना ज्ञान नहीं। न ही उसे अपने लक्ष्य का ज्ञान है। अपने आपको जानना ही मनुष्य का लक्ष्य है। बोध के चार लक्षण होते हैं। हानि के लिए दुख वा भय होना घृणा वा विकर्षण का होना। आत्मिक हानि, आत्मिक पतन और आत्मिक नाश का बोध ही आत्म बोध है। नीच गतियों के द्वारा आत्मिक पतन वा नाश होता है।

आत्मिक पतन का अगला लक्षण देव प्रभावों का बोध है। उच्च संगत की कीमत का बोध आत्मा बोध द्वारा होता है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने श्रद्धेय श्रीमान सरमुख सिंह जी को संगत का बोध कराया। श्री सभापति जी ने अपने जीवन की दो घटनाएं बताई जिनके द्वारा नीच असरों वा नीच संगत से बचने के बोध की जानकारी मिलती है। यह मुश्किल विषय था परन्तु सभापति जी ने बहुत सरलता से इसे समझाया, जिससे अधिकारी जनों को लाभ हुआ।

21.9.2013, दूसरी सभा- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने अपनी अयोग्यता स्वीकार करते हुए बताया कि स्वैअस्तित्व सम्बन्धी आदेशों का पाठ और व्याख्या मेरी योग्यता से बाहर है। पू० भगवान की देव बाणी की व्याख्या करने के लिए बहुत उच्च जीवन और उच्च विद्या की अत्यन्त अवश्यकता है। इस लिए मैं आप सबके सहयोग द्वारा कुछ आदेशों की व्याख्या करने का यत्न करूंगा। पू० भगवान ने आत्मा के सम्बन्ध में उच्च कोटि के विषय बनाए हैं। पहले अवश्यक बोध की अवश्यकता। मनुष्य और सब प्रकार की विद्या से अपने विषय की जो विद्या है, श्रेष्ट कि मनुष्य को आत्मा ही एक मात्र उसके शरीर की निर्माण कर्ता है। इससे आगे मनुष्य विश्व का अंग होने के कारण विश्व के सब विभागों से कैसे जुड़ा हुआ है, उसका जीना चारों जगतों के बिना असम्भव है। मनुष्य के जीवन का लक्ष्य हर नीच गति से मोक्ष और हर उच्च गति द्वारा विकास करना है। बाकी सब प्राप्तियों के सम्बन्ध वहां तक ही उचित हैं जहां तक वह उसके मुख्य लक्ष्य में सहायकारी होती हैं। मनुष्य को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए देव प्रभावों की प्रप्ति अति अवश्यक है जो केवल परम पू० भगवान देवात्मा की सत्य उपासना द्वारा ही प्राप्त है, इस ज्ञान विषयक ब्यान को बहुत से लोगों ने पसंद किया।

21.9.2013 शाम 4 बजे, सभापति श्रीमान किशन सिंह जी चौहान। विषय- भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज। "बड़े धन्य भाग उनके हैं, जो गुरू चरणों में आते हैं" भजन के बाद सभापति जी ने बताया कि मेरा सम्पर्क देव समाज से 1964 में हुआ, मुझे देव प्रभाव मिलने शुरू हुए। 1966 तक मैं बहुत प्रभावित होना शुरू हो गया। मुझे अपनी बुराईयां नज़र आने लगी। देव प्रभाव ने दिखाया कि स्कूल के लिए फंड इकट्ठा करके मैंने पूरे पैसे जमा नहीं करवाए थे। उसको वापिस करने के लिए मजबूर हो गया। इन प्रभावों ने संगत की कदर बढ़ा दी। माता पिता के लिए सन्मान पैदा हो गया। रिश्वत लेनी नज़र आई, वह वापिस करने के लिए देव प्रभावों ने मजबूर कर दिया। मेरे सम्बन्धों में व्यवहार बदल गया। माता पिता का उपकारी रूप नज़र आया। श्रीमान बलदेव सिंह जी पहली बार जब हमारे गांव में गए तो मैंने पहली बार माता पिता के पांव छूए। इन्होंने मुझे प्रणाम करना

सिखाया कि झुको और झुको। गुरू की कृपा से पिता जी ने भी हुक्का पीना छोड़ दिया। माता जी ने कली पीनी छोड़ दी। मेरी बहनों, मेरे भाई साहिब बदल गए। मिथ्या विश्वास छूट गए, पाप छूट गए। श्रीमान जी ने साधन करना सिखाया। मैं नौकरी में होते हुए ही walking में डिर्पाटमैंट की ओर से हिस्सा लेने लग गया था। राष्ट्रिय स्तर पर और अन्तर्राष्ट्रिय स्तर अनेकों गोल्ड वा सिलवर मैडल जीते। इस संग्राम से मेरी सेहत बहुत अच्छी हो गई। Walking के द्वारा अनेकों जनों के नशे वा मांसाहार छुड़वाया। इन्हीं प्रभावों के कारण मेरे पोते मेरे पैरों पर सिर रखकर मुझे प्रणाम करते हैं। इन्हीं देव प्रभावों द्वारा श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने बाहिया के इलाके में सरदार हरनाम सिंह जी वा श्रीमान सुच्चा सिंह जी आदि कितने जनों में उच्च परिवर्तन पैदा किए। श्रीमान प्रेम बल जी खेड़ा ने यह प्रभावों का अमृत पाकर अम्बाला के स्कूलों कालिजों में सराहनिय सेवा की है।

इनके ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने झूठी करामातों के विषय में बताते हुए कहा कि किस प्रकार देव प्रभावों में सच्ची करामातें होती हैं। सरदार सुच्चा सिंह जी नम्बरदार जो डाकुओं के सरदार थे पाप जीवन से मुक्त हो गए। स्त्री जाति के घातक स्त्री जाति की सेवा के लिए शान्ति आश्रम उनका घर बन गया। पंजाब के श्रेष्ट परिवार में उनकी बेटी का रिश्ता हो गया। देवात्मा के विरोधी वा निंदक चन्दूलाल जी न केवल बदल गए बल्कि देवात्मा को घर में खाना खिलाने के लिए सीढ़ियां पर अपनी पगड़ी बिछा दी। पत्नी जो देव आश्रम में आकर गालिया निकालती थी, स्यापा करती थी वह कन्या महा विद्यालय में शिक्षा पाकर गुरू महाराज की श्रद्धावान बन गई, उनके वहां पधारने पर भजन गाया, "कन्याओं के रक्षाकर्ता, धन्य हो तुम धन्य हो," और पूज्यनीय भगवान के सन्मान में पत्र पढ़ा। लाला जुल्ली राम जी ने रिश्वत को खून पीने के बराबर समझकर रिश्वत लेना छोड़ दिया और अपने ऐड़वोकेट बेटे को नसीहत की कि उमर का कुछ हिस्सा पू० भगवान के असरों में गुजारना है और उन्होंने स्वर्गवास होने से काफी वर्ष पहले वकालत छोड़ दी और समाज के कई विभागों में बहुत सेवा की।

श्रीमान बजरंग बिहारी जी को प्रभाव मिले तो उन्होंने रिश्वत द्वारा बनी अपनी कोठी छोड़ दी और एक झोंपड़ी में रहने लगे। श्रीमान स्वरूप जी वशिष्ट ने इन प्रभावों में आकर ब्यान किया कि मैं न अच्छा बेटा हूं न अच्छा पति, पिता वा मताहत हूं। सब रिश्तों में उनके बेहतरी आई। श्रीमान कंवर दविन्द्र सिंह जी, जो पिता को ताने देते थे कि बड़े भाई को पढ़ा दिया, मुझे केवल 10वीं करवा कर, खेती में लगा दिया, वह पिता के भक्त बेटे बन गए, पिता ने 6 लाख रू० देने चाहे, परन्तु 3 लाख भाई का हिस्सा लेने से इन्कार कर दिया। वह दूसरों के लिए एक मिसाल बन गए, यह सारा ब्यान बहुत प्रभावशाली था।

22.9.2013 सुबह 9 बजे, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भगवान के देव प्रभावों के अनोखे कारज के विषय में ब्यान किया। भजन, अर्चन और देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद दिल की तह से सहाय प्रार्थना की।

उन्होंने बताया कि जून में एक पानी की ज़बरदस्त रौ बही, जिसमें केदारनाथ के मन्दिर वा घरों, परिवारों की अथाह हानि हुई। सैंकड़ों इन्सान अभी भी मलबे में दबे पड़े हैं। नीच जीवन की रौ भी इतनी ही भयानक है। काम वासना की रौ में हररोज़ मासूम कन्याओं से बलात्कार हो रहे हैं। दोषियों को मौत वा कैद की सजाएं हो रही हैं। परन्तु फिर भी इसमें कमी नहीं आ रही। अनेकों राजनितिज्ञ, साधु, सन्त इस रौ मैं बहे जा रहे हैं। अनेकों साधु मन्दिरों का सोना लेकर जाते हुए पकड़े गए हैं। लालच में भाई भाई का दुश्मन बना हुआ है। उन्होंने बताया कि नीच भावों द्वारा

परिचालित काम वासना, धन वासना, लालच, स्वार्थ का जीवन नीच जीवन है। ईर्षा, द्वेष, नीच घृणा का जीवन नीच जीवन है। स्वाद वासना, मोह, आलस्य, प्रशंसा अनुराग सब नीच जीवन है। देवात्मा गुरू इस नीच जीवन से मुक्त करते है और उच्च जीवन पैदा करते हैं। जल्लौर सिंह जी के बेटे की बात बताई जिसने भरी सभा से 2 अध्यापकों के चरणों में सिर रखा। पत्नी के पैरों पर गिरकर अपने गुनाहों के लिए मुआफी मांगी। पिता के लिए हार लेकर गए। श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी के बाल हृदय के भीतर रिश्वत के लिए गहरी नफरत भर दी। लहौर में एक सभा में उनके पिता ने उनके पैरों पर पगड़ी रख दी कि मैं तुम्हें रिश्वत लेने के लिए मजबूर करता था। श्रीमान जगीर सिंह जी श्रीमान बलदेव सिंह जी को छुरा मारना चाहते थे कि यह हमारे गुरूओं के विरूद्ध बोलते हैं। अब उनके आज्ञाकारी वा श्रद्धावान बन गए हैं। श्रीमान सुखदेव सिंह जी मल्लेका ईमानदार भाई और दुकानदार बन गए। दुकानदार के भूलने पर भी उनकी रकम वापिस की। परम पू० भगवान देवात्मा सम्बन्धों में स्वार्थी जीवन बदलकर शुक्रगुज़ारी के भाव संचार करते हैं। एक अध्यापिका ने अपनी बड़ी बहन के बच्चे को रखने से इन्कार किया था, परन्तु देव प्रभावों में बैठकर रो रो कर अपने स्वार्थ का ब्यान किया और उस बच्चे के लिए जो कुछ कर सकती थी, वह किया। एक अध्यापिक ने एक विद्यार्थी की घड़ी लेकर वापिस नहीं की थी, क्षमा सहित वापिस की। और उदाहरणों के बाद सभापति जी ने अपने जीवन का संक्षेप वर्णन किया, कैसे शराबी, कबाबी, वासना के कीट को गुरू ने बदल दिया। माता पिता को सताने वाला उनका श्रद्धावान बेटा बन गया। बच्चों को प्यार करने वाला अध्यापिक बन गया।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सीता राम जी के सारे परिवार का धन्यवाद किया, विशेषकर बीबी आशा जी, और नरेश कुमार जी का फूलों के हारों के द्वारा और Momento जिस पर पू० भगवान की छवि बनी हुई थी, सम्मान किया। डा० नवजोत कालड़ा का भी धन्यवाद किया। कुछ जनों ने सत्संग में कुछ कुछ दिनों के लिए योगदान देने के लिए नाम लिखवाए। श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना, ओम प्रकाश जी अदर्श, श्री ओम प्रकाश जी वर्मा, श्री के. सी. अग्रवाल लखनऊ, श्री नरिन्द्र कुमार जी मेरठ, श्री सुरेश कुमार शर्मा जी जयपुर आदि। एक मान योग जन ने तम्बाकू सिगरेट छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कई सुन्दर, हृदय स्पर्षिय, घटनाओं का ब्यान किया। एक बहन ने बड़ी बहन के लड़के को बहुत लायक डाक्टर बनाने में स्नेह सहित योगदान दिया। एक भाई ने अपने भाई के बच्चे को बहुत प्यार से सुधारा। श्रीमान सीता राम जी कम पढ़े लिखे हैं, परन्तु इनका परिवर्तन कमाल का है। यह शराबी, कबाबी और बेहद अंहकारी और गुस्से वाले थे। अपने भाईयों वा पत्नी से अन्मेल था, परन्तु अब उनका परिवार एक मिसाल है। कितने सालों से हमेशा भाई मग्नि यज्ञ में यह सारे भाई इकट्ठे होकर प्रीति भोज करते हैं, कितने पहलुओं में सेवाकारी होते हैं। फिर श्रीमान मुरारी लाल जी और उनकी धर्म पत्नी का शानदार परिवर्तन बताया और बताया कि किस प्रकार एक जेठानी ने ईर्षा वश अपनी देवरानी के सारे कपड़े समेत सन्दूक जला दिया। परन्तु देव प्रभावों में बैठकर अपनी नीच गति का परिशोध किया। मशीन चला चलाकर कपड़े बनाए, सन्दूक बनाया और अपनी देवरानी को भेंट किया। देवात्मा ने स्वर्गिय दृष्य पैदा किए हैं। श्रीमान जी का दिल भर भर कर आ रहा था।

<u>22.9.2013, 11 बजे दूसरी सभा, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी।</u> श्रीमान जी ने परम पू० भगवान और अन्य सहायकारियों की सहायता के लिए

धन्यवाद किया जिनकी कृपा से हितकर उत्सव सम्पन्न हुआ। श्रीमान जी ने सभा कराने वालों, भजन गाने वालों, सेवा करने वालों का धन्यवाद किया। फिर उन्होंने सब सभाओं के विषय में बताया और भाव प्रकाश करने की प्रेरणा की।

श्री के. सी. अग्रवाल लखनऊ: मैं श्रीमान बलदेव सिंह जी को एक रेल के सफर में मिला था, इनके व्यवहार और व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ। यह मुझे अपनी कार में मेरे घर तक छोड़ कर गए। मैंने धन्यवाद किया। मैं इस समय की इन्तज़ार में था कि मिलकर मैं अपने भावों का इज़हार करूं। मैं टैलीफोन से उनके सम्पर्क में रहा और यहां आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे पुराने धार्मिक संस्कार थे। मैं Heart Patient हूं । मुझे लगता है कि 17 सितम्बर मेरी पैदायश का दिन है, ऐसा लगता है कि मेरे भीतर धन का बहुत लालच है। धन कमाने की बड़ी महिमा नज़र आती है। मैं आलस्य का शिकार हूं, यहां आकर नज़र आया है। लालच और आलस से निकलने की प्रेरणा मिली है।

श्रीमान मधू सूदन जी: मैं जब बिहार गया तो चण्डीगढ़ से धर्म सम्बन्धियों के बहुत फोन आए कि मैं तुफानों में तो नहीं घिर गया। स्वार्थ अंहकार और गुस्से के बहाव में बह रहा था। यह इस संगत में नज़र आया है। मैंने अंहकार में भतीजे पर हाथ उठाया (बहुत भरे वा दुखी दिल से) मैं अपने चचेरे भाईयों को मिलाकर चार भाई समझता था। परन्तु ज़मीन के बंटवारे में हम भाई आपस में लड़ने भिड़ने लगे। यदि भाई डंडे से मुझे मारते तो भी मुझे बोलना नहीं चाहिए था। गुरू प्रभावों में अपना आप नज़र आया है। मैं अधिक से अधिक इस दर से जुड़ा रहूं।

श्रीमान सीता राम जी: - गुरू की कृपा से अपने शराबी कबाबी नीच जीवन से बचा हूं। गुरू की संगत का धन्यवादी हूं। मैं हर प्रकार की सेवा करने को तैय्यार हूं।

श्रीमान अजय गुप्ता जी: - मैं बड़ा सख़्त अलोचक हूं, कृपा करके मेरी किसी बात से हानि न उठाएं। मैं ग़ल्तियां करता रहता हूं, Perfect नही हूं। मैंने उच्च संगत के कारण ग़ल्त कागजों पर हस्ताक्षर नहीं किए। मैं अपनी योग्यता को बढ़ाने की कोशिश करूंगा।

श्री दीप चन्द जी मेरठ: - चौधरी साहिब की कृपा से इस संगत के असर पाए हैं। इनकी संगत से मैं शराब और नशों से बच गया हूं। बहुत धन्यवाद करता हूं।

श्रीमान ओम प्रकाश जी आदर्श: - मेरे सौभाग्य की सीमा नहीं। बहुत सेवाएं पाई हैं, सबके लिए धन्यवाद। मेरा सुझाव है कि यहां हर साल एक उत्सव मनाया जाए। बड़ा भला हुआ फिर उन्होंने अपना बनाया हुआ भजन गाया।

श्रीमान वैंकटेशवर जी: - मैं जो आपके सामने खड़ा हूं, इस बात का सबूत है कि पू० भगवान के प्रभाव ठीक करामात करते हैं। मेरे कई शराबी साथी मर गए। मैं शराबी, बेईमान, आलसी, स्वाद अनुरागी, लड़ाका था। मैं मर जाता यदि यह संगत न मिलती, विकासालय का वातावरण न मिलता। मैं अपने घमंड मे गुरू को भी ग़ल्त सिद्ध करने में लगा रहता था। धर्म सम्बन्धियों को ठग वा धोखेबाज समझता था। श्रीमान बलेदव सिंह जी और साथी जो कारज कर रहें हैं, वह गुरू का सच्चा कारज है। मेरे बचाने में श्रीमान बलदेव सिंह जी का बहुत बड़ा हाथ है, मैं बहुत धन्यवादी हूं।

श्रीमान अनिल कुमार जी: - यह प्रभावों की दुनियां है। मैं उच्च असरों और देव असरों की यहीं आकर समझ आती है।

श्रीमान हरदेव सिंह जी केसूपुर: - मुझे प्रभाव मिले हैं। मेरे उपकारी धर्म सम्बन्धी मेरी रक्षा करते रहते हैं। मैं महसूस करता हूं कि मुझे इन असरों की

अत्याधिक अवश्यकता है।

श्रीमान जलधर जी:- जमीन में बंटवारे का झगड़ा था। यहां आकर अपना व्यवहार बुरा लगा हैं मधू सूदन जी ने पांच साल मुझे अपने पास रखकर, पढ़ाया और लिखाया (B.A. करवाया) उनका उपकार नज़र आ रहा है। भरे दिल से आंसू बहाते हुए सब के सामने भाई के पैरों पर सिर रखकर क्षमा मांगी। जिससे बड़ा सुन्दर दृष्य पैदा हुआ। हाजरीन पू० भगवान के चरणों में झुक रहे थे। मैं कोशिश करूंगा कि सब हालात ठीक करूं। सच्चे भाई बनना है और यह समस्या हल करनी है।

डा० विनोद जी खेड़ा :- इस दृष्य को देखकर खुशी वा तृप्ति मिली है। इन दोनों को गुरू से जोड़ने वा सेवक बनाने में मेरी श्रद्धेय माता जी का बहुत हाथ था। भाईयों का मेल देखकर परलोक में मेरी माता जी अवश्य खुश होंगी।

श्रीमान जीत सिंह जी:- मैं ग्रन्थी वा पाठी होकर बहुत पाठ किए। सन्मान वा अच्छा खाने पीने को मिलता था। हमारी रोज़ी रोटी इसी द्वारा चलती थी। पर यह पता नहीं लगा कि अच्छे कैसे बना जाता थी। पुराने धर्मों में बताया जाता है कि यह पाठ आदि करो, तो सब कुछ ठीक हो जाता है। कई जन धर्म स्थानों में नंगे पावों से जाते हैं और किसी की नई जूती डालकर ले आते हैं। सवेरे गुरूद्वारे, मन्दिर जाने को ही धर्म समझते थे। किसी नौकर को मालिक के घर से तभी कुछ मिलता है, जब मालिक के पास कुछ हो, यदि कोई किसी से मदद मांगे, तो उतना ही मिल सकता है, जितना उसके पास हो। गुरू महाराज को नेचर ने विलक्षण शक्तियां दी हैं। रोगी रूहों की जो वह मदद कर सकते हैं, वह कोई और नहीं करता नज़र आता। पाठ पूजा छोड़कर पहले से अच्छी रोटी खाते हैं। मेरे ईलाज में बड़े आंटी (प्रिंसीपल सुरजीत बराड़) छोटे आंटी जी (डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों) के संग्राम और उपकार नज़र आ रहे हैं। यह कहते हुए बेबस वह दोनों के पैरों पर गिर पड़े और धन्यवाद का प्रकाश किया, जिससे बहुत ही स्वर्गिय दृष्य पैदा हुआ। मेरे भतीजे, भतीजीयां मेरा बहुत सत्कार करते हैं, मेरा कहना मानते हैं, (ज़ोर ज़ोर से रोने लगे) जिसको गुरू महाराज का दर मिल जावे, उससे अमीर कौन हो सकता है। गुरू के देव प्रभावों का हमने उतना सन्मान नहीं किया, तिरस्कार ही किया है। हमारे भले का सिलसिला बन्द हो रहा था। यहां आकर श्रीमान सीता राम जी के परिवार को सेवा करते देखकर धन्य धन्य हो रहे हैं और ध न्यवाद कर रहे हैं।

डा० शशी जी जैन:- जिन्हें 21 की रात को वापिस आना पड़ा पर उन्होंने बताया कि सारे वातावरण को देखकर मैं बहुत प्रभावित हूं, यहां पर जितने लोग भी आए हैं सेवक और श्रद्धालु हैं, स्कूलों कालिजों के लोग नहीं, मुझे डेढ़ दो साल से अच्छी संगत नहीं मिली उन्होंने 1100 रू० दान में भी दिए।

समय काफी हो चुका था, इसलिए सभापति जी ने किसी अंश उत्सव की सफलता के लिए परम पू० भगवान देवात्मा की अथाह व्याकुलता और सहायकारी शक्तियों की सहायता और उच्च आत्माओं की कृपा के लिए धन्यवाद किया। उनके लिए अधिक से अधिक धन्यवाद से भर सकें। एक बार फिर उत्सव की तैय्यारी में, खाना बनाने, रिहायश का इन्तज़ाम करने के लिए धन्यवाद किया।

17500 रू० लंगर आदि के लिए दान प्राप्त हुआ। 1900 रू० के करीब किताबें बिकी। दो नये जन एक लखनऊ और एक जयपुर से आए जो समाज के निकट होकर गए।

आख़िर में देव आरती के सामूहिक गान के बाद चार बार जय ध्वनि के साथ यह उत्सव सम्पन्न हुआ।

(एक हाजरीन)

सुख अनुराग की लीला

परम पू० भगवान देवात्मा ने यह सत्य मनुष्य मात्र पर ज़ाहिर किया है कि मनुष्य सुख अनुरागी है, और जहां से उसे सुख मिलता है, उसका पक्षपाती बन जाता है या यह कहें कि पक्षपाती बनना उसके लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। वह सुख चाहे दुनियावी सुख हो, चाहे मान प्रशंसा, बड़ाई का सुख हो, चाहे अपने पक्षधारी द्वारा अपने पक्ष को सही बताने का सुख या किसी भी अपने शारीरिक, मान्सिक अर्थात अपने विचार के समर्थन का सुख हो।

मनुष्य प्रकृति बड़ी गुंझलदार है, इसको मनुष्य के लिए समझना महा कठिन ही नहीं, असम्भव है। फिर जब हम किसी मनुष्य के साथ पक्षपात से जुड़ जाते हैं, तो उसको समझना और भी कठिन है।

हमारी यह सुख अनुरागी प्रकृति क्या अपने प्रति और क्या दूसरों के प्रति हमें भ्रम में रखती है। जैसे एक 2 बच्चा अपने माता पिता को सबसे प्रिय समझता है, क्योंकि वह हर सुख जिसकी उसको इच्छा होती है, उसे देते है, वह अपने माता पिता को प्यार करता है, दूसरों के पास भी उनकी बढ़चढ़ कर प्रशंसा करता है, परन्तु वही माता पिता जब उसके किसी सुख पूरा करने में असमर्थता दिखाते हैं या वह सुख हानिकारक समझकर उसे देना नहीं चाहते, तो बच्चे की नज़रें बदल जाती हैं, वह अपने उन्हीं माता पिता को घृणा करने लगता है, उन्हें स्वयं बुरा सोचने लगता है, उनकी निन्दा भी करने लगता है, कई बार माता पिता के विरोधियों के साथ मिल जाता है, विरोधी उसका लाभ उठाते हैं। वही बच्चा जो माता पिता को प्यार करता था, उनके बिना पल पर भी हर नहीं सकता था, उस समय उसमें कृतज्ञता का भाव नहीं था, केवल सुख का भाव था (जैसा कि हम सब में है) सुख पूरा न होने पर अपना रूप बदल लेता है।

इसी प्रकार देव समाज की संस्कृति में हमें श्रद्धा, कृतज्ञता की मोटी परिभाषाएं समझ में आ जाती हैं। हम किसी के गुणों या उपकारों का बाख़ान करके इस भ्रम में पड़ जाते हैं। कि हम श्रद्धा वा कृतज्ञता का प्रकाश कर रहे हैं, परन्तु 99% वह हमारे नीच सुखों से प्रेरित और हमारे पक्ष पर अधारित साधन होते हैं। यदि हम श्रद्धा का साधन करते हैं तो हम केवल उनके गुणों का ही बख़ान करेंगे, जिनका हमारे हृदय में पक्ष है, या उस ब्यान से उन जनों को खुश करेंगे, जिनसे अपना स्वार्थ है इसलिए उनके कुर्बानी का बढ़चढ़ कर बाख़ान करेंगे ताकि उनकी नज़र में अपना स्थान बना सकें। परन्तु उससे भी अधिक कुर्बानी वा त्याग करने वालों को किसी ख़ातिर में नहीं लाएंगे। देवात्मा के मिशन में काम करने वालों के प्रति भी हमारा यही रविया है। आज के युग में देव समाज में जो कोई थोड़ा सा भी काम करता है, उसकी प्रशंसा के पुल बांध दिए जाते हैं और उन्हें बड़ी से बड़ी पदवी का अधिकारी घोषित करके समझा जाता है कि हमारे भीतर देव समाज में काम करने वालों की हृदय की गहराई से कदर है, जबकि जिन्होंने इस काम में अपनी जवानी लगा दी, देव समाज के हृदय परिवर्तन के काम में बहुत बढ़ा योगदान दिया, देव समाज की संस्थाओं को बनाने और बढ़ाने में योगदान दिया, देव समाज की करोड़ों की सम्पति बनाई और बढ़ती उमर में भी अपनी योग्यता और परिपक्व अनुभव से इस मिशन में मेहनत कर रहे हैं, उनको किसी ख़ातिर में नहीं लाते, तो गुरू महाराज के प्रति श्रद्धा का सूचक हमारा व्यवहार नहीं, बल्कि अपने पक्षधरों के प्रति पक्षपात पूर्ण खैया है, यह सचाई कड़वी है, परन्तु सत्य सदा कड़वा होता है।

यही हाल हमारी कृतज्ञता का है। कई जनों के व्यवहारों से ऐसा लगता है कि वह अपने बड़े से बड़े उपकारी को लताड़ सकते हैं और उन्हें अपमानित

करके शायद वह अपनी जीत अनुभव करते हैं, परन्तु किसी सभा में कुछ उपकारियों के उपकारों का ब्यान करके, जिनसे वर्तमान में उनके किसी सुख की पूर्ति होती है, वह भ्रम में पड़ जाते हैं कि उनके साधन कृतज्ञता के साधन है। देवात्मा की शिक्षा के अनुसार सबसे बड़े उपकारी हमारे अध्यात्मिक उपकारी हैं। जो उन्हें भूल जाते हैं, या उनके उपकारों को न केवल अनुभव नहीं करते बल्कि उन्हें अपमानित कर सकते हैं, उसके बाद भी कोई दुख वा पश्चाताप महसूस नहीं करते कि उनके दुर्व्वहार का किसी उपकारी के हृदय पर कितना आघात लगा है, तो वह इस भ्रम में जीऐ कि वह कृतज्ञता का भाव पैदा कर रहे हैं, यह अध्यात्मिक नियमों के विरूद्ध है।

यह सत्य सब भावों के लिए लागू होता है। हर सुख अनुरागी मनुष्य ऐसा ही कर सकता है। हम मनुष्यों के ही नहीं, हम उस पदार्थ वा जीव के भी पक्षपाती, बन जाते हैं, जिनसे हमें किसी प्रकार का सुख मिलता है। मनुष्य होना और पक्षपाती होना एक ही बात है। हम तो अपनी विचारधारों के ही इतने पक्षपाती हो जाते हैं कि उस विचारधारा पर विचार करने या उस पर निष्पक्ष किसी से कोई राए लेने में असमर्थ्य हो जाते हैं यदि कोई यह कहे कि निष्पक्ष मत रखने वाले कुछ जन बैठकर विचार करें और कोई ठीक निष्कर्ष निकालें तो हम इसके लिए भी तैय्यार नहीं होते। मनुष्य का यह दुर्भाग्य केवल उसे ही नहीं, जिस जिससे वह सम्बन्धित होता है, उसे भी ले डूबता है।

सुख अनुरागों की अजब लीला है, परन्तु उसे हम दूसरों के जीवनों में तो देखते हैं, परन्तु अपनी और ध्यान नहीं जाता। अवश्यकता है कि हम अपनी अपनी अवस्था पर विचार करें और अपनी अपनी योग्यतानुसार उस से उभरें।

(सुरजीत बराड़)

बाकी पेज 2 का

बताया कि उनकी निष्टा देव समाज प्रति वा पू० भगवान के प्रति अडोल थी। हमें देव समाज की महानता बताते रहते थे। उसके साथ जुड़े रहने की अवश्यकता बताते रहते थे। मम्मी वा मेरी पत्नी में कोई बात होती तो मेरी पत्नी का पक्ष लेते थे। उनकी integrity बेमिसाल थी। कई घटनाएं पेश की। वह सारी जिन्दगी हमें ऊचा नहीं बोले माता जी के अकस्मात विछोड़े को कभी दिल पर नहीं लगाया। बहुत ही सम्मान पूर्वक भरे दिल से श्रद्धा से भरकर काफी देर वह बोलते रहे। यह भी बताया कि उनके लिए Pray करने में मेरी कमी है। उन्होंने यह भी बताया कि मुझे बहुत कुछ उनसे मिला है। उन्होंने बहुत प्यार दिया, महान संस्कार दिए, जिससे हमें फौज की ज़िन्दगी में बहुत सहायता मिली।

उनके ब्यान के बाद सभापति जी ने सबके साथ मिलकर शुभकामना विषयक भजन गाया और उच्च भावों से भरकर उनके शुभ के लिए शुभ कामना की। चार बार जय ध्वनि करके यह सभा सम्पन्न हुई।

सभापति जी ने सभा के बाद परिवार को बिठाकर पू० भगवान के अद्भुत आर्विभाव के अपने महा सौभाग्य का ब्यान करते हुए, परिवार को बड़ी व्याकुलता के साथ उनके स्वरूप को न जानने और उनके साथ न जुड़ने के घाटे से बचने के लिए पुरज़ोर प्रार्थना की।

परिवार ने सभापति जी और साथियों को बहुत ज़ोर देकर फलाहार करवाया और 2100 रू० भले कामों के लिए दान में दिए।

यह सभा सबके लिए अर्थ पूर्ण और असर भरपूर थी, जिस के लिए परम पू० भगवान का जितना भी धन्यवाद किया जाए कम है।

(एक हाजरीन)

विज्ञानमूलक दार्शनिक सत्य सिद्धान्त

1 - सिद्धानत

हमारे स्थूल सौर्य्य मंडल के संगठित होजाने पर उसका प्रत्येक लोक, परिवर्तन के अखण्ड नियम के अनुसार परिवर्तित होकर अपने भीतर से जिन सूक्ष्म कणों को निकालता रहा है, उनके द्वारा भार विषयक नियम के अनुसार जो इसी मंडल के अनुरूप एक और सूक्ष्म सौर्य्य मंडल बन गया है, उसकी सूक्ष्म पृथिवी का नाम परलोक है।

2 - सिद्धान्त

सूक्ष्म पृथिवी भी अपेक्षाकृत अधिक से अधिक नाना सूक्ष्म विभागों में विभक्त हैं। इन लोकों में पहले से दूसरा, दूसरे से तीसरा, तीसरे से चौथा, चौथे से पांचवां, पाचवें से छठा, छठे से सातवां सातवें से आठवां, आठवें से नवां, नवें से दसवां आदि लोक अपेक्षाकृत अधिक से अधिक श्रेष्ठ और सुन्दर अवस्था रखते हैं। पहले लोक से अपेक्षाकृत कुछ नीचे तीन प्रकार के कुछ और प्रदेश भी हैं, कि जिनमें बहुत निम्न श्रेणी के प्राणी और जीव आदि वास करते हैं।

3 - सिद्धान्त

किसी मनुष्य के मरने पर उसका आत्मा यदि अपने स्थूल शरीर से आवश्यक सूक्ष्म परमाणु प्राप्त कर सकता हो, और अपने भीतर आकार निर्म्माणकारी यथेष्ट सामर्थ्य भी रखता हो, तो वह इन दोनों बातों के पूरा होने पर अपने पहले आकार के सदृश थोड़ी सी देर में हि एक नया सूक्ष्म आकार बनाकर और उससे सम्मिलित होकर, फिर पहले की न्याई एक गठन-प्राप्त जीवित आकार बन जाता है। और इस नए परन्तु पहले के अनुरूप अस्तित्व को प्राप्त होकर उसकी उच्च वा नीच दशा के अनुसार वह या तो परलोक सम्बन्धी किसी लोक वा प्रदेश में जाकर वास करता है, वा यदि परलोक सम्बन्धी किसी लोक वा प्रदेश में जाने के योग्य न हो, तो इसी पृथिवी में अथवा इसके आस पास वास करता है। ऐसे आत्मा अपनी अवस्था के विचार से अघम-आत्मा कहलाते हैं, और उनका यह वास स्थान अघम-लोक कहलाता है।

4 - सिद्धान्त

जो आत्मा अपेक्षाकृत जितना उच्च हो, वह अपनी शक्तियों से अपने स्थूल शरीर में अपेक्षाकृत उतने हि अंश उच्च सूक्ष्म परमाणु उत्पन्न करता है, और अपने स्थूल शरीर के छोड़ने पर सूक्ष्म शरीर के निर्म्माण करने के लिए उतने हि अंश उच्च श्रेणी के आकार वाले सूक्ष्म परमाणु लाभ करता है, और इसीलिए उच्च श्रेणी के आकार के निर्म्माण और ग्रहण करने के योग्य होता है। और जिस दर्जे वह आप उच्च हो, उसी दर्जे के अनुकूल सूक्ष्म-परमाणु-निर्म्मित कश्के उच्च लोक में प्रवेश और वास करने के योग्य होता है।

5 - सिद्धान्त

जो आत्मा जितना नीच वा अधम होता है, वह उतने हि दर्जे अपने भौतिक शरीर में नीचे दर्जे के सूक्ष्म-परमाणु उत्पन्न करता है, और स्थूल शरीर के छोड़ने पर (यदि वह शरीर निर्म्मणकारी शक्ति रखता हो) नीच श्रेणी के सूक्ष्म शरीर को प्राप्त होकर या तो इसी पृथिवी में रह जाता है, या सूक्ष्म पृथिवी में पहुंच कर अपनी दशा के अनुसार किसी नीचे के लोक में वास करता है।

6 - सिद्धान्त

जो आत्मा जहां तक उच्च बनने की योग्यता रखता है, वहां तक उच्च बनने से जैसे एक ओर वह अधिक जीवित रह सकता है, वैसे हि उच्च से उच्च लोकों में पहुंचने और वास करने का भी अधिकारी बनता है।

7 - सिद्धान्त

जो आत्मा उच्च बनने की योग्यता नहीं रखता, वह चाहे किसी लोक में हो, धीरे-धीरे अपनी

दशा में क्षय प्राप्त होते होते एक दिन उसी में वा किसी अन्य लोक में पूर्णत: नष्ट हो जाता है।

8 - सिद्धान्त

नीचगति परायण आत्मा अपने भौतिक शरीर के जिस अंग के द्वारा (यथा - हाथ, पांव, मुंह, आंख, कान, गुप्त - इन्द्रिया आदि) विश्व के किसी विभाग की जितने अंश में अधिक हानि करता है, उतने हि अंश में अपने उस अंग के सम्बन्ध में सूक्ष्म परमाणुओं के उत्पन्न करने की क्षमता को नष्ट करता रहता है, और इसीलिए अपने भौतिक शरीर के छोड़ने पर उसके जिस अंग के सम्बन्ध में उसे जितने अंश सूक्ष्म परमाणुओं के मिलने की आवश्यकता है वह यदि पूर्णत: प्राप्त न हों, तो वह अपना वह अंग निर्माण नहीं कर सकता, और यदि अधूरे प्राप्त हों, तो उसका वह अंग भी अधूरा बनता है।

9 - सिद्धान्त

स्थूल शरीर के छोड़ने पर कितने हि पापिष्ट आत्मा अपने सूक्ष्म शरीर के बन जाने पर या तो एक वा कई अंगों से पूर्णत: विहीन होते हैं, या अपूर्ण अर्थात् अधूरे और निकम्मे अंग रखते हैं। इन अंगों के न बनने वा अधूरे बनने से वह जिस दारूण दु:ख के भागी बनते हैं, उसके भिन्न वह अपने अधोगति - प्राप्त जीवन के कारण अन्य प्रकार के दु:खों को भी प्राप्त होते हैं।

10 - सिद्धान्त

अपने सम्बन्धियों वा अन्य लोगों के घरों में जो आहार बनता है, अथवा बिक्री के लिए अन्य दुकानों में रहता है, वहां अधम आत्मा पहुंचकर या तो उसमें से जो सूक्ष्मांश निकलता है, उसे, या वृक्षों के खाद्य फलों के पास पहुंचकर उनके सूक्ष्मांश को खाकर, और जल के सूक्ष्मांश से अपनी प्यास बुझाकर जीवन धारण करते हैं। मांसाहारी अधम आत्मा बूचड़खानों और कसाईयों की दुकानों से रूधिर और मांस के सूक्ष्मांश के भिन्न, ऐसे पशुओं को भी खाकर गुज़ारा करते हैं, कि जो मरने के बाद सूक्ष्म शरीर ग्रहण करने पर अधम लोक से ऊपर परलोक सम्बन्धी किसी लोक में नहीं पहुंच सकते, और अधम लोक में हि रह जाते हैं। इनके भिन्न कई बार मनुष्यों के उन छोटे - छोटे बच्चों को भी खा जाते हैं कि जो स्थूल शरीर के छोड़ने और नए शरीर के ग्रहण करने पर, और ऐसे समय में अपने किसी अधम लोक वासी सम्बन्धी वा अन्य परलोक वासी अभिभावक वा संरक्षक आत्मा की अवर्तमानता में अपनी रक्षा आप नहीं कर सकते, और इन दुष्ट आत्माओं के हाथ आ जाते हैं।

11 - सिद्धान्त

इस पृथिवी में पशु जगत् के वह लाखों जीव, जो पूर्णत: हिंसक वा हानिकारक होते हैं, अपने स्थूल शरीर के छोड़ने के बाद हि पूर्णत: नष्ट हो जाते हैं। परन्तु उनके भिन्न और कितने हि जीवन मरने के बाद परलोक में जाते हैं। इनमें से जो जीव अपने विश्वगत नाना सम्बन्धों में जितने जितने अंश अपेक्षाकृत अधिक हितकर होते हैं, उसी के अनुसार वह किसी उच्चलोक में गमन करते हैं। लाखों नीचगति परायण पापिष्ट मनुष्य (जिनमें हज़ारों ईश्वरवादी भी होते हैं) मरने पर अधम लोक में हि रह जाते हैं, अथवा पहले वा दूसरे लोक से आगे जाने की योग्यता नहीं रखते, परन्तु गौ, बैल आदि कितने हि हितकर पशु सूक्ष्म देह के प्राप्त होने पर, उनसे भी ऊपर के लोकों में गमन करते हैं।

उद्रिद् - जगत् सम्बन्धी प्राणियों के सम्बन्ध में भी यही नियम है। परन्तु उद्रिद् - जगत् सम्बन्धी कोई छोटा वा बड़ा पौदा वा वृक्ष मरने पर अपने स्थान के निकट हि कोई आकार ग्रहण नहीं करता, किन्तु परलोक में पहुंचने की योग्यता के रखने पर अपने सूक्ष्मांश के साथ वहां जाकर, और वहां की भूमि की भूमि में प्रविष्ट होकर फिर अपने पहले रूप के सदृश

आकार ग्रहण करता है।

12 - सिद्धान्त

परलोक सम्बन्धी जिन विविध लोकों में मनुष्य, पशु और वृक्ष वास करते हैं, वहां वह सब अपने अपने सूक्ष्म आकारों के साथ उसी प्रकार अपना अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते हैं, जिस प्रकार इस पृथिवी में स्थूल आकारों के साथ व्यतीत करते थे। प्रभेद केवल इतना होता है, कि वहां पर किसी लोक में, यहां के ग्राम वा नगर वासियों की तरह सब प्रकार के उच्च वा नीच मनुष्य वा पशु आदि एक हि जगह गड्डमड्ड होकर वास नहीं करते, किन्तु प्रत्येक लोक में उसी एक ही अवस्था वाले मनुष्य और पशु आदि वास करते हैं, कि जो उसमें पहुंचने के अधिकारी होते हैं।

13 - सिद्धान्त

परलोक सम्बन्धी जो लोक जितना अधिक उच्च है, वह उतना हि अधिक उच्च श्रेणी के मनुष्यों, पशुओं और वृक्षों और जल - वायु आदि का वास स्थान है, और इसलिए उसमें उतना हि अधिक परस्पर मेल और सुख का राज्य पाया जाता है, अर्थात उनके सम्बन्ध दो परस्पर के लिए उतने हि अधिक मीठे, शान्तिदायक, आनन्ददायक और जीवन - दायक होते हैं। इसके विपरीत जो लोक अपेक्षाकृत जितना नीचे है, उसके अधिवासी मनुष्य, और पशु आदि, उतने हि नीचे की श्रेणी के होते हैं, और उनके सम्बन्ध परस्पर के लिए अपेक्षाकृत उतने हि कम मीठे और कम शान्ति - दायक और कम सुखकर होते हैं, और बहुत नीचे के लोकों की अवस्था अपेक्षाकृत बहुत बुरी, और अधम लोक वासियों की सबसे अधिक निकृष्ट और दुःखदाई है।

14 - सिद्धान्त

सैकड़ों परलोकवासी आत्मा, अपने इस लोकवासी किसी सम्बन्धी के विपद्ग्रस्त होने पर उसके पास पहुंचकर अपनी प्रेरणा वा मंगल कामना विषयक शक्ति के द्वारा एक वा दूसरे प्रकार से उस की सहायता करते हैं। और यदि वह ममूर्षु अवस्था में हो, तो उसके नए सूक्ष्म शरीर के ग्रहण करने में आवश्यक सहाय करने के भिन्न, उसके शरीरधारी हो जाने पर यदि वह परलोक में जाने के योग्य हो, तो उसे वहां अपने साथ ले जाते हैं, और वहां पर यथासाध्य उसकी एक वा दूसरी मदद करते हैं।

15 - सिद्धान्त

जब तक किसी आत्मा में कोई सात्विक भाव उत्पन्न न हो, और उसके द्वारा विश्व के किसी विभाग के सम्बन्ध में वासना रहित किसी हित की उत्पत्ति न हो, तब तक वह सूक्ष्म पृथिवी मे दूसरे लोक से आगे नहीं जाता। फिर कुछ सात्विक भावों की उत्पत्ति और उन्नति से यद्यपि आत्मा उच्चगति को प्राप्त होकर कई उच्च लोकों तक गमन करता है, परन्तु जब तक सर्वांग देवजीवन प्राप्त न हो, तब तक वह विश्व के उच्च विकास के साथ सर्वांग मेल स्थापन और इसीलिए सदा के लिए उच्चजीवन में विकाश लाभ नहींकर सकता।

26 - सिद्धान्त

सात्विक भावों से विहीन और केवल सुख परायण आत्माओं में भी जो आत्मा इस लोक में नाम वा सन्मान अथवा परलोक में सुख पाने अथवा दोनों प्रकार की वासनाओं से परिचालित होकर परहित सम्बन्धी कोई काम करते हैं, अथवा मानसिक उन्नति और शारीरिक संयम का साधन रखते हैं, उससे भी कुछ अंश तक उनका हित होता है, और जीवन उन्नत होता है। और वह ऐसे सब आत्माओं की अपेक्षा जो इस प्रकार से भी अपना कोई हित साधन नहीं करते, अधिक जीवन और विकार रहित सुख लाभ करते हैं।

देवात्मा

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

एक अनाम का जाना

वह अनाम रही, लेकिन असाधारण मृत्यु को वरण किया। एक ऐसी मृत्यु जिसने लोगों की सोई चेतना और समाज की आत्मा को झकझोरा है। उसने अहसास कराया है कि हम कैसे बीमार और अपराधी सोच के साये में रहते आए हैं। दशकों से ऐसी घटनाएं आप मनमानस पर जो जख्म छोड़ती रहीं और उनको लेकर जिस लाचारी का भाव हममें बना रहा, उसके प्रति उसने विद्रोह को प्रेरित किया है। उससे जो बर्बरता हुई, उसने आखिरकार लोगों की तंद्रा तोड़ी। उन्हें आगाह किया कि अगर वे यूं ही सब कुछ सहते रहे, तो फिर कोई सुरक्षित नहीं है। जो देश की राजधानी में सरे-आम उसके साथ हुआ, वह किसी के भी साथ हो सकती है। तो लोग अब सड़कों पर आकर हुक्मरानों से जवाब मांग रहे हैं। जनाक्रोश ने सत्ता और प्रशासन में हरकत पैदा की है। लेकिन हजारों दूसरी अनाम महिलाएं वैसे ही जुर्म का शिकार न हों, इसके लिए यह काफी नहीं है। इसलिए कि समस्या सिर्फ पुलिस या न्याय व्यवस्था तक सीमित नहीं है। इसकी जड़ें हमारे समाज में, वस्तुत: हमारी मानसिकता में पैठी हुई है। लगभग हर लड़की की तरह उस अनाम को भी लैंगिक भेदभाव और स्त्री को कमतर मानने की सोच के परिणामों को अक्सर भुगतना पड़ा होगा। उसके संदर्भ में बात वहीं तक नहीं रही, बल्कि छह निहायत क्रूर आरोपियों ने उसके जिस्म को इस तरह निशाना बनाया कि जिंदगी के आगाज में ही उसका दुखद अंजाम हो गया। इससे हमारे आहत मन का उन पाशविक लोगों को सख्त-से-सख्त सजा देने की मांग करना स्वांभाविक है। ऐसे अपराधियों पर लगाम की जनता की मांग भी उचित है। लेकिन अगर चर्चा यहीं तक सीमित रह जाती, तो उस अनाम की मृत्यु समाज में जिस आक्रोश एवं ऊर्जा के विस्फोट का कारण बनती और कोई ठोस उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकती थी। आवश्यकता बहस को समाज की विषम एवं स्त्री विरोधी परंपराओं तक ले जाने की है। सड़कों पर उमड़े जनाक्रोश को उस सोच की तरफ मोड़ने की है, जो स्त्री को सिर्फ शरीर मानती है, जो वहां तक पहुंची, तो यह उस अनाम के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। अपराधियों को सजा मिली उससे जनता की न्याय के प्रति आस्था बढ़ी है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts